## (प्री स०मो० बनजीं)

होना चाहिये । झूठ के प्रेस म्रगर पनपेंगे तो हमारा देश समाजवाद की दिशा में जा नहीं सकेगा ।

श्री जार्ज फ़रनेंडीज (बम्बई दक्षिण) : ग्रध्यक्ष महोदय, ग्रखबारों की मोनोपली के बारे में, मालिकी के बारे में बहस चल रही है । मैं इस बात को मानता हूं कि इस समय पुंजी-पतियों के हायों में जितने ग्रखबार हैं उनका वेजा इस्तेमाल किया जाता है लेकिन फिर भी मैं यह समझता हूं कि बहस में इस बात को भी महे-नजर रखना चाहिए कि सिर्फ मालिकी ग्रखबारों की किसकी है इतना ही नहीं बल्कि इन ग्रखबारों का इस्तेमाल किस ढंग से किया जाता है, वह महत्वपूर्ण हैं बात है, .... (व्यवषान) ..... <sup>६</sup> ग्राज जोाहम एक सिलसिला देख रहे हैं उससे हमें ऐसा लगता है कि सरकार के समर्थन में ग्रगर कोई ग्रखबार खड़ा होगा तो वह ग्रखबार ठीक है लेकिन ग्रगर किसी ग्रखबार में सरकार के विरोघ में कुछ भो बात आयेगी तो वह अखबार भी बहुत ही खराब है । ग्राज सुबह प्रधान मंत्री की एक तकरीर मैंने पढ़ी । जो व्यंग चित्न निकालने वाले हैं उन पर भी गुस्सा कर रही हैं। यानी ग्रखबारों में क्या क्या खबरें छप कर ग्राईं, इस पर तो उनकी परेशानी है ही लेकिन ग्रगर किसी कार्टुन में भी उनकी तस्वीर जरा इधर उधर हो जाये, बाल कुछ ठीक ठाक न किये जायें तो उस पर भी गुस्सा व्यक्त करने के लिए प्रधान मंत्री पहुंच रही हैं। मेरी समझ में नहीं ग्राता कि क्या ग्रखबारों का इस्तेमाल सिर्फ सरकार सरकार की नीति ग्रौर ''ग्रवर लीडर'' की तारीफ करने के लिए होना चाहिए ? ग्रभी चन्द दिनों पहले हिन्द-स्तान के ग्रखबारों में एक विज्ञापन ग्राया-रैली बिहाइन्ड अवर लीडर । किस की झोर से ? ग्रुप ग्राफ यंग विजनेस एग्जीक्यटिव्ज की ग्रोर से ।

सभापति महोदयः इसका रेफेंस मधु लिमयेजीदे चुकेहैं।

श्री जार्ज फ़रनेंडीज : ग्राप जरा इसको सूनिये । किस तरह से ग्रखबारों का गलत इस्तेमाल किया जा रहा है, मैं उसका सबूत श्रापके सामने दे रहा हूं। 50 हजार रुपये से अधिक उस विज्ञापन पर खर्च हम्रा । श्रौर यह रुपया किसी यंग विजनेस एग्जीक्युटिव ने नहीं दिया बल्कि यह रुपया महेन्द्र एण्ड कम्पनी दिया I. (व्यव-. . . . **.** धान) .... इस कम्पनी की तरफ से रुपया दिया गया ग्रौर इंडियन सोसाइटी ग्राफ एडवर्टाइजर्स जिसके जरिए से विज्ञापन दिये जाते हैं, इस विज्ञापन को निकाला गया लेकिन नीचे लिखा ग्रंप ग्राफ यंग बिजनेस एग्जीक्युटिव्ज । इस प्रकार कितना झूठ ग्रखबारों के जरिए फैलाया जा रहा है एक व्यक्ति की तस्वीर को दूनिया के सामने पेक्ष करने के लिए . . . . (व्यवधान) . . . . इसलिये मैं कहना चाहनी हूं कि महत्व इस बात पर नहीं देना चाहिए कि इस समय ग्रखबार के कौन मालिक हैं बल्कि ज्यादा महत्व इस बात पर देना ग्रखबारों का इस्तेमाल कैसे किया जाता है । (व्यवधान) .... इस सरकार के अस्तित्व में ग्रौर इस के स्वरूप में या इसकी तस्वीर में एक कौड़ी काभी फर्क नहीं ग्राया है। यह सरकार एक साल पहले या एक महीने पहले जो थी वही ग्राज भी है । लेकिन ग्रखबारों का इस्तेमाल जरूर देश के लोगों को गुमराह करने के लिये किया जा रहा है कि समाजवाद की झोर देश चल रहा है। प्रधान मंत्री के मकान के सामने लोगों को इकट्ठा करो, वे कुछ चिल्लायें ग्रौर प्रधान मंत्री कुछ कहें और फिर ग्रखबार के जरिए लोगों को गुमराह करने का काम चले । ग्रगर यही श्रखबारों की स्वतन्त्रता का मतलब हो तो फिर इसका कोई मतलब ही नहीं रह जाता है । इसलिए मैं बहुत ही नम्प्रता के साथ कहना चाहंगा कि मालिकी किसकी है, यह महत्व की बात जरूर है लेकिन अखबारों का इस्तेमाल कैसे किया जाता है, यह उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण है। मैं चेतावनी देना चाहता ह कि म्राज देश में एक सिलसिला चला है कि सरकार के एक नेता. एक दल ग्रौर एक नीति के पीछे सभी खडे हो जायें। इस किस्म से लोगों को गुमराह करने के लिये ग्रखबारों का इस्तेमाल किया जाता है यह बन्द करें ग्रौर ग्रखबारों में झठे इण्तिहार देकर एक तस्वीर बनाने का प्रयास वन्द करें तथा कारटनिस्टस लोगों को, ग्रौर गरीब कर्मचारियों को धमकाने वाला तरीका जो ग्राप लोग चला रहे हो, प्रधान मंत्री के दरवाजे के सामने टकों में भर कर कुछ लोगों को लाकर खड़े कारने का जो सिलसिला है इस सिलसिले को बन्द करें वरना यह बात आपके दल के लिये, इस मल्क के लिये ग्रौर प्रजातन्त्र के लिये खतरन कहोगी ।

15 hrs.

सभापति महोबय : श्री पीलू मोदी ।

श्वी कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : इग्राप हमको भी बोलने देंगें ?

सभापति महोदयः देखिये, दो घंटा इस का वक्त था, लेकिन ग्राप करीब तीन घंटे ले चुके हैं। थर्ड रीडिंग के वक्त देखा जायगा।

श्री मधु लिमये : दो, दो मिनट दीजिये ।

श्वी कंवर लाल गुप्तः कम से कम पांच, पांच, मिनट का समय दीजिये ।

SHRI PILOO MODY (Godhra): Sir, for the last so many years, I have been rather concerned with our depleting freedoms. In the last few months, we have seen great inroads being made not only on our freedoms but also on our credulities. We have seen reports published which have been deliberately planted in newspapers. In fact, I have been going ground saying, in the last three weeks, at

least a few hundred lies must have been published deliberately in the press.

I cannot entirely blame the reporters and pressmen who have taken these reports to their offices, because I have known from personal knowledge that very often reports were given, information leaked out and statements made which were contrary to real facts. This process of gradual erosion on our freedoms started many years ago, but as a result of what happened during the last two or three weeks, it has taken on an accelerated tempo. At this stage, I would like to mention a particular conversation which was heard from a Cabinet Minister by several people present not far from where I am standing now. A Cabinet Minister of the Government of India was trying to impress upon his limited audience about how the press had now become very fair and very balanced in its view. He quoted an editorial written in the Hindustan Times and said, "See what a balanced editorial this is!" He went on to say that except for Frank Moraes "What has been published in the Express also is giving a very balanced view." An observer happened to point out, "What about the Statesman?" He said, "What can I do? The trouble with the Statesman is that they can stand on their own legs." I think a world of meaning can be implied in this slip on the part of this Cabinet Minister. I am afraid that this is the fact that we have all been subjected to. Sir, you have heard speakers before me complaining very bitterly and I will not make the same accusations. I think they have been rather eloquently made. But it is not only the press but also our airways that have been somewhat polluted recently. I can assure you, it was not through another nuclear ex-This time it was purely by plosion. the verbiage that was fed into the air. Similarly on many other fronts. T feel our freedom has been eroded. T would like to take this opportunity of warning this House that unless we

## 271 Res. & Press BHADRA 6, 1891 (SAKA) Council (Amdt.) 272

set some rules and code of conduct about what is good Journalism, what is independent journalism and what is journalism uninterfered by the single largest and greatest authority and power that we are surrounded with the Government of India—I think our fate and our future are rather dismal.

SHRI KARTIK ORAON (Lohardaga): Mr. Chairman, the function of an Ambassador is to lie in a foreign country about his own country for the good of his own country. Similarly, the function of the press is to lie in its own country about its own country for the good of its own country. Fortunately or unfortunately the press, which is the guide of the progress of the country, is failing in its duty because most of the newspapers are owned by big businessmen or political parties. So long as they are owned and managed by big business or political parties their primary function would be to sing the song of their owners. Therefore, unless the monopoly in newspapers is removed they cannot give expression to their independent opinion and thereby serve the nation. What the country today needs is independent opinion about many things which affect the interests of the country. For instance, the opposition consider it their function to oppose anything that comes from the government, whether it is right or wrong. In the same way, if the newspapers are owned by political parties, they would also function the same way. Therefore, in the interests of the country, the press. which is one of the instruments of freedom of expression, should be allowed to function freely and without any restrictions. If they are not given that freedom, then there is no use of talking about the fundamental rights of the citizens.

Then, if government make some investment in some papers or news agencies they should ensure that they are functioning well. For instance, I have been hearing

## 5, 1891 (SAKA) Council (Amdt.) 272 Bill.

complaints about Samachar Bharati; I do not know how far they are correct. Since a number of governments have invested money in this news agency, it is the duty and responsibility of the government to appoint a Managing Director or General Manager in the Board so that he can look after the interests of the government and the money that has been invested by the government. At the same time, he can ensure that some guidelines are formulated as to how it should function.

All the laws that we enact should be with a view to see that the Press Council enjoys the maximum freedom, uninterfered by any political party or businessmen.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF INFORMAION AND BROADCASTING AND IN THE DEPARTMENT OF COMMUNICA-TIONS (SHRI I. K. GUJRAL): I am grateful to the hon. Members that on clause 2 so much debate has heen initiated. Some points have been which I would like to meet made here. One of my hon. friends has asked me if we are giving substantial advertisements to Indian language papers or not, so far as advertisement goes. I will dispose of this point by saying that not cnly are we helping the small and medium newspapers but we are particularly helping the Indian language newspapers. 18.13 per cent of the total budget of the DAVP goes to Hindi papers and 37.98 per cent to other Indian language newspapers; in other words 56 per cent of the total budget of DAVP goes to language papers.

श्री जार्ज फरनेन्डोज : 45 परसेंट ग्रंग्रेजी के ग्रसबारों को जाता है ।

श्वी कंवर लाल गुप्त: ग्रंग्रेजी डेड़ परसेंट लोग जानते हैं, लेकिन श्राप ग्रंग्रेजी के ग्रखबारों को 45 परसेंट देते हैं।